राजस्थान के आर्थिक विकास में पर्यटन उद्योग का महत्त्व

डॉ. भरत पारीक

पर्यटन उद्योग न केवल राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है अपितु इसका देशी–विदेशी मुद्रा अर्जित करने के साथ–साथ रोजगार अवसरों को सृजित करने में भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। देश के सकल घरेलू उत्पाद में पर्यटन उद्योग का योगदान 2013–14 में लगभग 6.8 प्रतिशत तथा 2016 में 9.6 प्रतिशत रहा है। वर्ष 2013–14 में भारत में 1282 मिलियन घरेलू तथा 22. 57 मिलियन विदेशी पर्यटकों ने देश का भ्रमण किया। इस प्रकार राजस्थान पर्यटन का विश्व पटल पर एक प्रमुख स्थान रहा है। यहाँ की शिल्पकला, संस्कृति, तीर्थ स्थल, पारंपरिक लोककलाएं, ऐतिहासिक धरोहरें, हवेलियाँ, किलें तथा अन्य विरासत आदि पर्यटक को अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। भौगोलिक दृष्टि से भी यह राज्य प्राकृतिक सम्पदा से परिपूर्ण एवं प्रकृति के उपहारों से सुसज्जित रहा है। राजस्थान में सर्वाधिक देशी पर्यटकों की पसन्द अजमेर है इसी प्रकार विदेशी पर्यटक सर्वाधिक जयपुर जिले को तरजीह देते है। वर्तमान समय में पर्यटन को उद्योग का दर्जा दिया जा चुका है ऐसे में राज्य सरकार का प्रमुख लक्ष्य देशी–विदेशी पर्यटकों को उच्च गुणवत्तायुक्त सुविधाएं प्रदान करना तथा उन्हें आकर्षित करना है।

राजस्थान में पर्यटकों का आगमन एवं वृद्धि

देशी–विदेशी पर्यटकों के लिए राजस्थान एक प्रमुख पर्यटन स्थल रहा है। राजस्थान की अर्थव्यवस्था में पर्यटन के बढ़ते महत्त्व को ध्यान में रखकर ही राज्य सरकार ने इस क्षेत्र को और अधिक विकसित करने हेतु पर्यटन नीति बनाई है। राजस्थान में वर्तमान में 91.83 लाख देशी व 6.48 लाख विदेशी पर्यटक प्रतिवर्ष भ्रमण हेतु आते है तथा यह संख्या प्रतिवर्ष बढ़ती जा रही है। वर्ष 1998 में राजस्थान में 64.03 लाख देशी व 5.91 लाख विदेशी पर्यटकों को मिलाकर कुल 69.94 लाख पर्यटक आए। इसी प्रकार वर्ष 1999 में 66.76 देशी व 5.62 विदेशी सहित कुल 72.37 लाख पर्यटकों के लिए राजस्थान पसन्दीदा राज्य रहा। वर्ष 2000 में कुल 79.97 लाख पर्यटकों ने राज्य का भ्रमण किया जिसमें 73.74 लाख देशी व 6.23 लाख विदेशी पर्यटक थे। वर्ष 2001 में 77.57 लाख देशी व 6.08 लाख विदेशी पर्यटकों सहित राजस्थान में कुल 83.65 लाख पर्यटकों ने राज्य की सैर की। वर्ष 2002 में 4 लाख विदेशी व 83 लाख देशी पर्यटकों सहित प्रदेश में कुल 87 लाख पर्यटकों ने राजस्थान के विभिन्न पर्यटक स्थलों को देखा। जिनकी संख्या बढकर 2015 तक 3.66 करोड हो गयी जिसमे 3.52 करोड स्वदेशी व 14.76 लाख विदेशी पर्यटक सम्मिलित है।

राज्य में पर्यटकों का आगमन वर्ष 1971 से 2015 तक

क्र.स.	वर्ष	पर्यटकों की संख्या			गत वर्ष की तुलना में परिवर्तन प्रतिशत में		
		स्वदेशी	विदेशी	योग	स्वदेशी	विदेशी	योग
1	1971	880694	42500	923194			
2	1972	902769	48350	951119	2.51	13.76	3.02
3	1973	1157959	54611	1212570	28.27	12.95	27.49
4	1974	998227	55781	1054008	13.79	2.14	13.08
5	1975	1117663	66207	1183870	11.96	18.69	12.32
6	1976	1303633	92272	1395905	16.64	39.37	17.91

7	1977	1618822	125112	1743934	24.18	35.59	24.93
8	1978	2042586	160134	2202720	26.18	27.99	26.31
9	1979	2306550	195837	2502387	12.92	22.30	13.60
10	1980	2450282	208216	2658498	6.23	6.32	6.24
11	1981	2600407	220442	2820847	6.13	5.87	6.11
12	1982	2780109	237444	3017553	6.91	7.71	6.97
13	1983	2932622	266221	3198843	5.49	12.12	6.01
14	1984	3040197	259637	3299834	3.67	2.47	3.16
15	1985	3120944	268774	3389718	2.66	3.52	2.72
16	1986	3214113	291763	3505876	2.99	8.55	3.43
17	1987	3424324	348260	3772584	6.54	19.36	7.61
18	1988	3495158	366435	3861593	2.07	5.22	2.36
19	1989	3833008	419651	4252659	9.67	14.52	10.13
20	1990	3735174	417641	4152815	2.55	0.48	2.35
21	1991	4300857	494150	4795007	15.14	18.32	15.46
22	1992	5263121	547802	5810923	22.37	10.86	21.19
23	1993	5454321	540738	5995059	3.63	1.29	3.17
24	1994	4699886	436801	5136687	13.83	19.22	14.32
25	1995	5248862	534749	5783611	11.68	22.42	12.59
26	1996	5726441	560946	6287387	9.10	4.90	8.71
27	1997	6290115	605060	6895175	9.84	7.86	9.67
28	1998	6403310	591369	6994679	1.80	2.26	1.44
29	1999	6675528	562685	7238213	4.25	4.85	3.48
30	2000	7374391	623100	7997491	10.47	10.74	10.48

24	1994	4699886	436801	5136687	13.83	19.22	14.32
25	1995	5248862	534749	5783611	11.68	22.42	12.59
26	1996	5726441	560946	6287387	9.10	4.90	8.71
27	1997	6290115	605060	6895175	9.84	7.86	9.67
28	1998	6403310	591369	6994679	1.80	.2.26	1.44
29	1999	6675528	562685	7238213	4.25	.4.85	3.48
30	2000	7374391	623100	7997491	10.47	10.74	10.48
31	2001	7757217	608283	8365500	5.19	.2.38	4.60
32	2002	8300190	428437	8728627	6.99	.29.57	4.34
33	2003	12545135	628560	13143695	51.14	46.71	50.92
34	2004	16033896	971772	17005668	27.81	54.60	29.09
35	2005	18787298	1131164	19918462	17.17	16.40	17.13
36	2006	23483287	1220164	24703451	25.00	7.87	24.02
37	2007	25920529	1401042	27321571	10.38	14.82	10.60
38	2008	28358918	1477646	29836564	9.41	5.47	9.21
39	2009	25558691	1073414	26632105	9.87	27.36	10.74
40	2010	25543837	1278523	26822400	0.06	19.11	0.71
41	2011	27137323	1351974	28489297	6.24	5.74	6.21
42	2012	28611831	1451370	30063201	5.43	7.35	5.52
43	2013	30298150	1437162	31735312	5.89	0.98	5.56
44	2014	33076491	1525574	34602065	9.17	6.15	9.03
45	2015	35187573	1475311	36662884	6.38	3.29	5.96

Source: (www.rajasthantourism.gov.in)

राजस्थान की अर्थव्यवस्था में पर्यटन की भूमिका

राजस्थान में पर्यटन अन्य क्षेत्रों जैसे कृषि, उद्योग आदि की भांति ही महत्त्वपूर्ण क्षेत्र रहा है। पिछले कुछ वर्षो के दौरान हुए सरकारी प्रयासों के परिणामस्वरूप आज पर्यटन उद्योग बहुत तेजी से बढ़ता उद्योग बन गया है। राजस्थान की अर्थव्यवस्था में

भी इसका महत्त्वपूर्ण योगदान हो गया है किन्तु फिर भी राज्य की अर्थव्यवस्था को और मजबूती देने एवं कृषि तथा औद्योगिक विकास के साथ पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देने के लिए और अधिक प्रयासों की आवश्कता है। राजस्थान की अर्थव्यवस्था में पर्यटन के महत्त्व को निम्न आधारों पर समझा जा सकता है।

1. विदेशी मुद्रा की प्राप्ति

राजस्थान में पर्यटन उद्योग का विशेष महत्त्व है तथा इस उद्योग से राज्य को प्रतिवर्ष विदेशी मुद्रा की प्राप्ति होती है। राज्य में जनवरी माह में वर्ष 2012 में 1.68 बिलियन डॉलर की विदेशी मुद्रा अर्जित की गई वहीं 2016 में यह बढ़कर 2.02 बिलियन डॉलर हो गई। इसी प्रकार दिसम्बर 2012 में यह आय 1.93 बिलियन डॉलर थी वहीं 2016 के अन्त तक यह 2.25 बिलियन डॉलर हो गई। इस प्रकार प्रतिवर्ष पर्यटन उद्योग से प्राप्त विदेशी मुद्रा से राज्य की अर्थव्यवस्था को मजबूती मिली है।

पर्यटन से (प्रतिमाह) विदेशी मुद्रा की प्राप्ति
(वर्ष 2012 – 2016)

(आंकडे बिलियन डॉलर में)

वर्ष/माह	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
2012	1.68	1.72	1.56	1.31	1.02	1.16	1.51	1.31	1.22	1.54	1.78	1.93
2013	1.98	1.91	1.76	1.33	1.21	1.23	1.44	1.33	1.22	1.4	1.7	1.94
2014	1.88	1.85	1.72	1.52	1.34	1.47	1.71	1.71	1.49	1.64	1.85	2.07
2015	1.95	1.8	1.78	1.61	1.49	1.5	1.88	1.75	1.57	1.62	1.91	2.13
2016	2.02	2	1.96	1.75	1.4	1.6	1.9	1.95	1.80	1.85	2.11	2.25

(**Source :** www.indiatourism.gov.in)

2. निर्यातों को बढ़ावा

राजस्थान में देशी–विदेशी पर्यटकों के आने से राज्य में बनने वाले उत्पादों जिनमें हस्तशिल्प, हथकरघा, मूर्तियाँ, आभूषण आदि की विदेशों में मांग बढ़ी है। यही कारण है कि प्रदेश के इन उत्पादों के निर्यात से राज्य को विदेशी मुद्रा अर्जन में भी फायदा पहुंचा है। राज्य में उत्पादित विभिन्न हस्तशिल्प वस्तुओं का निर्यात गत वर्षों में निरंतर बढ़ा है। प्रदेश के हस्तशिल्प उद्योग में निर्मित लगभग 2 करोड़ वस्तुएं प्रतिवर्ष निर्यात हो रही है।

3. रोजगार अवसरों में वृद्धि

पर्यटन के क्षेत्र में देश–विदेश में रोजगार के असीम अवसर है। वर्ल्ड ट्रेवल एण्ड ट्यूरिज्म कॉउन्सिल के अनुसार पर्यटन से विश्व में 292 मिलियन रोजगार के अवसर सृजित हुए है अर्थात् प्रत्येक 10 में से 1 रोजगार पर्यटन से मिला हुआ है। वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में पर्यटन क्षेत्र का योगदान 10.2 प्रतिशत है। वर्ष 2016 के आंकड़ों के अनुसार पर्यटन से देश में 40.3 मिलियन रोजगार सृजित हुए है जो कि कुल रोजगार का 9.3 प्रतिशत है। राजस्थान में पर्यटन के क्षेत्र में असीम संभावनाएं है तथा राज्य में पर्यटन एक उद्योग का रूप ले चुका है जहाँ प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से लोगों को रोजगार मिला हुआ है। पिछले कुछ वर्षों में राज्य सरकार ने भी पर्यटन के विकास की दिशा में अनेक साहसिक कदम उठाये है तथा जिसका परिणाम यह हुआ है कि राज्य में देशी–विदेशी पर्यटकों की संख्या में काफी इजाफा हुआ है। राज्य में पर्यटन के विकास से होटल, परिवहन,

हथकरघा, मूर्तिकला आदि उद्योगों को तो बढ़ावा मिला ही है साथ ही पर्यटकों के मनोरंजन तथा आमोद–प्रमोद से भी अनेक लोगों को रोजगार मिला है। राज्य में वर्तमान में लगभग 2 लाख व्यक्तियों को पर्यटन उद्योग से रोजगार मिला हुआ है। होटल, परिवहन, सेवा, प्रकाशन, लघु उद्योग, हस्तशिल्प उद्योग आदि में रोजगार के अवसरों में निरंतर वृद्धि भी हो रही है।

4. आधारभूत संरचना का विकास

पिछले कुछ वर्षों में राज्य सरकार ने पर्यटन के क्षेत्र को बढ़ावा देने हेतु विशेष प्रयास किये है जिससे पर्यटन उद्योग को बढ़ावा तो मिला ही है किन्तु साथ ही साथ राज्य में आधारभूत संरचना जैसे सड़क परिवहन, रेल सुविधाओं का विकास, संचार, बैंकिग आदि क्षेत्रों का भी विकास हुआ है इससे न केवल पर्यटन उद्योग को लाभ पहुंचा है अपितु अन्य उद्योगों को भी प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से इसका फायदा पहुंच रहा है।

5. अतिरिक्त आय का स्रोत

राजस्थान एक रेतीला प्रदेश है जहाँ अधिकतर भू–भाग रेतीला है। इसके अलावा सूखा तथा अकाल का प्रकोप प्रतिवर्ष रहता है। ऐसी अवस्था में रोजगार के अवसर घटना स्वाभाविक है। किन्तु राजस्थान रेतीला होने के बाद भी ऐतिहासिक धरोहरों को अपने में समेटे हुए है। जिसके कारण ही देशी–विदेशी पर्यटक यहाँ आने को उत्सुक रहता है। इससे प्रदेश में पर्यटन की गतिविधियां वर्ष–पर्यन्त जारी रहती है जो लोगों को अतिरिक्त आय प्रदान करती है।

असिस्टेण्ट प्रोफेसर, व्यावसायिक प्रशासन विभाग
एस.एस.जैन सुबोध पी.जी (ऑटोनोमस) महाविद्यालय

संदर्भ ग्रंथ

1. एच. भीष्मपाल (2012) पर्यटकों का आकर्षण : राजस्थान'' आकृति प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली पृ.सं. 72–75
2. यादव, रघुवीर (2011) ''सम्पूर्ण भारत के सांस्कृतिक पर्यटन स्थल'' चन्दा पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश पृ.सं. 98–99, 104–107
3. बंसल, सुरेश चन्द्र (2011) ''पर्यटन भूगोल एवं यात्रा प्रबन्धन'' साहित्य सागर प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर पृ.सं. 61–63, 91–92, 274–275
4. कर्नल जेम्स टॉड़ (1988) ''राजस्थान का इतिहास'' श्याम प्रकाशन, जयपुर पृ.सं. 167–170, 178–181, 219–222
5. शर्मा, एच.एस. एवं शर्मा एम. (2013) ''राजस्थान का भूगोल'' पंचशील प्रकाशन, जयपुर पृ.सं. 8, 9
6. व्यास, राजेश कुमार (2004) ''राजस्थान में पर्यटन प्रबन्ध'' राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर (राज.) पृ.सं. 41–45, 59–63, 100–105
7. गोयल, सुनिल (1985) '' पर्यटकों का स्वर्ग – राजस्थान'' गोयल ब्रदर्श, उदयपुर, पृ.सं. 7–9
8. गुप्ता, शिव सहाय (2010) ''पर्यटन के विविध स्वरूप'' मोहित बुक्स इन्टरनेशनल, नई दिल्ली पृ.सं. 46–48, 73–76
9. प्रगति प्रतिवेदन 2015–2016, पर्यटन विभाग राजस्थान जयपुर
10. Raina A. K., Dr. S. K. Agarwal (2004), "The Essence of Tourism Development:Dynamics, Philosophy, and Strategies", Sarup & Sons Publications, New Delhi,
11. A. Satish Babu (2008), "Tourism Development in India: A Case Study", A.P.H. Publishing Corporation, New Delhi.
12. Akhtar, Javed (1991), "Tourism management in India" Ashish New Delhi, (p.p 44-47)
13. Kumar Akshay (1997), "Tourism Management", Commonwealth Publishers, New Delhi.
14. Allchin B, Allichin F F and Thapar B K: Conservation of India Heritage.

15. Asif Iqbal Fazili (2006), S Husain Ashra, "Tourism in India: Planning and Development", Sarup & Sons Publications, New Delhi.
16. Bhatia A.K. (2001), "International Tourism Management", Sterling Publications, New Delhi.
17. Punia Bijender K. (2008), "Tourism Management: Problems and Prospectus", A P H Publishing Corporation, New Delhi.
18. www. rajasthantourism.gov.in